नव भारत

| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

स्मार्ट बॉर्डर की ओर बढ़ता भारत

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति अब केवल सैनिक तैनाती तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वह तेजी से तकनीक आधारित सुरक्षा मॉडल की ओर बढ़ रही है. केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा भारत-पाकिस्तान और भारत-बांग्लादेश सीमा को 'स्मार्ट बॉर्डर' में बदलने की घोषणा इसी व्यापक रणनीतिक बदलाव का संकेत है. यह पहल केवल सीमाओं की निगरानी का मामला नहीं, बल्कि बदलती वैश्विक सुरक्षा चुनौतियों के अनुरूप भारत की नई सोच को भी दर्शाती है.

भारत की सीमाएं लंबे समय से घुसपैठ, ड्रग्स तस्करी, हथियारों की सप्लाई और पशु तस्करी जैसी समस्याओं से जूझती रही हैं. पाकिस्तान सीमा पर आतंकवाद और ड्रोन के जरिए हथियार पहुंचाने की घटनाएं लगातार सामने आती रही हैं, जबकि बांग्लादेश सीमा पर अवैध घुसपैठ और कैटल स्मगलिंग सुरक्षा एजेंसियों के लिए बड़ी चुनौती बनी हुई है. ऐसे में केवल पारंपरिक तारबंदी या मानव निगरानी पर्याप्त नहीं रह गई थी. यही कारण है कि अब सरकार हाईटेक कैमरों, सेंसर, रडार और रियल-टाइम मॉनिटरिंग सिस्टम के जरिए सीमाओं को डिजिटल सुरक्षा कवच देने की दिशा में आगे बढ़ रही है.

दुनिया के कई देशों ने पहले ही 'स्मार्ट बॉर्डर मैनेजमेंट' को अपनाया है. अमेरिका, इजरायल और यूरोप के कई देशों में सेंसर आधारित निगरानी, थर्मल इमेजिंग और ड्रोन ट्रैकिंग तकनीक का इस्तेमाल हो रहा है. भारत भी अब उसी दिशा में कदम बढ़ा रहा है. यह पहल खास तौर पर इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आज सुरक्षा खतरे केवल जमीन तक सीमित नहीं हैं. ड्रोन तकनीक ने सीमा पार से हथियार, नकली करेंसी और मादक पदार्थों की तस्करी को नया रूप दे दिया है. ऐसे में तकनीक आधारित निगरानी समय की मांग बन चुकी है.

हालांकि इस योजना की सफलता केवल उपकरण लगाने से तय नहीं होगी. सबसे बड़ी चुनौती इन हाईटेक प्रणालियों के प्रभावी संचालन और रखरखाव की होगी. सीमावर्ती क्षेत्रों की भौगोलिक परिस्थितियां बेहद कठिन हैं. कहीं घने जंगल हैं, कहीं दलदली जमीन, तो कहीं नदी और पहाड़ी इलाके. ऐसे क्षेत्रों में तकनीकी ढांचे को लगातार सक्रिय रखना आसान नहीं होगा. इसके अलावा साइबर सुरक्षा भी एक बड़ा मुद्दा है. यदि दुश्मन देश इन डिजिटल प्रणालियों को हैक करने या बाधित करने की कोशिश करें, तो उससे निपटने की मजबूत व्यवस्था भी जरूरी होगी.

इस पूरी योजना का एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक पक्ष भी है. गृह मंत्री ने सीमावर्ती क्षेत्रों में 'जनसंख्या बदलाव' रोकने की बात कही है. यह विषय संवेदनशील है और इसे राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप के बजाय राष्ट्रीय सुरक्षा और कानूनी प्रक्रिया के दायरे में ही देखा जाना चाहिए. किसी भी लोकतंत्र में सुरक्षा और मानवीय संवेदनाओं के बीच संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक होता है.

सकारात्मक बात यह है कि पश्चिम बंगाल, असम और त्रिपुरा जैसे राज्यों का इस परियोजना को सहयोग मिल रहा है. सीमाई सुरक्षा केवल केंद्र सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि राज्यों के सहयोग से ही प्रभावी हो सकती है. यदि केंद्र और राज्य मिलकर समन्वित रणनीति अपनाते हैं, तो यह परियोजना राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में बड़ा बदलाव ला सकती है.

स्पष्ट है कि भारत अब 'रिएक्टिव सिक्योरिटी' से आगे बढ़कर 'प्रोएक्टिव और टेक्नोलॉजी ड्रिवन सिक्योरिटी' की ओर बढ़ रहा है. स्मार्ट बॉर्डर केवल तारबंदी का विस्तार नहीं, बल्कि नए भारत की सुरक्षा दृष्टि का प्रतीक है.

कर्मों से बनता है व्यक्तित्व, शब्दों से नहीं

डॉ. मुकेश नायक

आज का समय भाषणों, नारों और सोशल मीडिया पर किए जाने वाले बड़े-बड़े दावों का दौर बन गया है.हर व्यक्ति अपने विचारों, आदर्शों और सिद्धांतों को शब्दों में प्रस्तुत करने की कोशिश करता है, लेकिन किसी भी मनुष्य का वास्तविक मूल्य केवल उसके शब्दों से नहीं, बल्कि उन शब्दों को जीवन में उतारने की क्षमता से तय होता है.व्यक्तित्व केवल बातों से नहीं बनता, बल्कि आचरण, ईमानदारी और कथनी-करनी की एकरूपता से निर्मित होता है. निस्संदेह, शब्दों में प्रभाव होता है. एक प्रभावशाली वक्ता कुछ समय के लिए लोगों को प्रेरित कर सकता है, लेकिन स्थायी सम्मान उसी व्यक्ति को मिलता है जिसकी बातें उसके कर्मों में दिखाई देती हैं.जब कोई व्यक्ति सत्य, नैतिकता और ईमानदारी की चर्चा तो करता है, पर स्वयं उनका पालन नहीं करता, तब धीरे-धीरे उसकी विश्वसनीयता समाप्त होने लगती है.समाज उसके शब्दों पर विश्वास करना छोड़ देता है और उसके भाषण खोखले प्रतीत होने लगते हैं.

> जीवन में सच्ची सफलता प्राप्त करने के लिए कथनी और करनी के बीच की दूरी समाप्त करनी होगी .यदि हम सत्य की बात करते हैं तो हमें सत्यनिष्ठ जीवन भी जीना होगा .यदि हम अनुशासन का महत्व बताते हैं तो स्वयं अनुशासित बनना होगा .समाज में परिवर्तन लाना है तो उसकी शुरुआत स्वयं के व्यवहार से करनी होगी .यही वास्तविक नेतृत्व का सार है और प्रभावशाली व्यक्तित्व की नींव भी. इस सत्य को सरल शब्दों में यूँ कहा जा सकता है—
> **जो कहते हो, उसे करके दिखाओ, क्योंकि दुनिया सुनती कम और देखती अधिक है.**
> अंतत: मनुष्य को उसके भाषणों से नहीं, बल्कि उसके दैनिक आचरण से याद रखा जाता है .जब शब्द और कर्म एक हो जाते हैं, तब व्यक्तित्व में असाधारण शक्ति आ जाती है .ऐसे लोग केवल सम्मान ही नहीं पाते, बल्कि समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाते हैं ।कथनी और करनी का अंतर धीरे-धीरे व्यक्ति के चरित्र को भीतर से खोखला कर देता है .यह विश्वास को नष्ट करता है, प्रभाव को कम करता है .

कथनी और करनी का सामंजस्य व्यक्ति के चरित्र और आत्मविश्वास से गहराई से जुड़ा होता है.जो व्यक्ति अपने ही शब्दों के प्रति निष्ठावान रहता है, वही वास्तविक सम्मान अर्जित करता है.इतिहास में महान व्यक्तित्व इसलिए अमर नहीं हुए कि उन्होंने केवल उपदेश दिए, बल्कि इसलिए कि उन्होंने अपने आदर्शों को स्वयं जीकर दिखाया.महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा की बात कही और जीवनभर उसका पालन किया.स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को साहस, अनुशासन और कर्म का संदेश दिया क्योंकि उन्होंने स्वयं संघर्ष और कठिनाइयों का सामना किया था.उनके शब्दों में शक्ति इसलिए थी क्योंकि उनके पीछे कर्म की सच्चाई थी।इसके विपरीत, जो लोग केवल बड़ी-बड़ी बातें करते हैं लेकिन उन्हें जीवन में उतार नहीं पाते, वे उस दीपक के समान हैं जिसमें तेल तो बहुत हो, पर प्रकाश न हो.ऐसे लोग कुछ समय के लिए प्रशंसा प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन जब उनके कर्म उनके शब्दों का विरोध करने लगते हैं, तब उनका प्रभाव शीघ्र ही समाप्त हो जाता है.समाज उन्हें अविश्वसनीय और असत्य मानने लगता है.

संत कबीर ने इसी सत्य को अत्यंत सरल और प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है—

कथनी मीठी खांड सी, करनी विष की लोय,
कथनी तज करनी करे, विष से अमृत होय.

अर्थात केवल मधुर वचन पर्याप्त नहीं हैं.यदि कर्म विषैले हों तो शब्दों का कोई मूल्य नहीं रह जाता, लेकिन जब कर्म श्रेष्ठ हो जाते हैं, तब विष भी अमृत बन जाता है.यह संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना सदियों पहले था ।आधुनिक समाज में कथनी और करनी का यह विरोधाभास स्पष्ट दिखाई देता है.अनेक लोग सार्वजनिक मंचों और डिजिटल माध्यमों पर नैतिकता, आदर्शवाद और सामाजिक सुधार की बातें करते हैं, लेकिन निजी जीवन में उनका व्यवहार बिल्कुल अलग होता है.इसका परिणाम यह हुआ है कि लोगों के बीच विश्वास कम होता जा रहा है.संबंध औपचारिक और सतही बनते जा रहे हैं तथा दिखावे ने वास्तविकता का स्थान लेना शुरू कर दिया है.सच्चा विश्वास तभी बनता है जब शब्द और व्यवहार एक समान हों ।विश्वसनीयता व्यक्तित्व की सबसे बड़ी शक्ति होती है.जो व्यक्ति कम बोलता है लेकिन अपने प्रत्येक वचन को निभाता है, वह स्वत: ही लोगों का विश्वास जीत लेता है.इसके विपरीत, जो बार-बार वादे तोड़ता है, उसकी स्थिति ऐसी हो जाती है कि लोग उसके सत्य पर भी संदेह करने लगते हैं.कबीर की एक और सीख यहाँ प्रासंगिक हो उठती है—

बोली एक अनमोल है, जो कोई बोले जानि,
हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि.

अर्थात शब्दों का मूल्य तभी है जब वे सोच-समझकर बोले जाएँ और उनके पीछे सत्य तथा कर्म की शक्ति हो. कथनी और करनी में एकरूपता लाने की शुरुआत आत्मपरीक्षण से होती है.प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं से पूछना चाहिए कि क्या वह वही आचरण करता है जिसकी सलाह दूसरों को देता है.यदि उत्तर नकारात्मक है, तो समाज को बदलने से पहले स्वयं को बदलना आवश्यक है.वास्तविक व्यक्तित्व विकास उपदेश देने से नहीं, बल्कि आत्मपरिवर्तन से आरंभ होता है. एक शिक्षक तभी सफल माना जाता है जब उसका जीवन उसके शिक्षण का उदाहरण बने.एक नेता तभी महान कहलाता है जब वह जनता से किए गए वादों को पूरा करे. माता-पिता तभी आदर्श बनते हैं जब वे स्वयं उन मूल्यों का पालन करें जिन्हें वे अपने बच्चों में देखना चाहते हैं.सलाह देना आसान है, लेकिन उसे अपने जीवन में उतारना ही वास्तविक चुनौती और महानता की पहचान है.

विंध्य की डायरी

माफियाओं पर नकेल कसी जाएगी ?

डॉ. रवि तिवारी

सब कुछ हो जाता है की कार्यसंस्कृति को वर्षों से अपनाकर नेता, अधिकारियों और कर्मचारियों के गठजोड़ में सालों बाद पड़े पेंच में जनता तो खुश नजर आ रही है, पर हमेशा मजमा लगाकर चलने वाले नेताओं के चेहरे पर उड़ रहीं हवाइयां कुछ और ही कहानी बयां कर रही है. इस कहानी के मूल पात्र ने अपने अल्प प्रवास पर क्या गुफ्तगूं की, अब यह जनचर्चा का विषय बना

हुआ है. मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और रीवा कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी की विमानतल पर भेंट भले प्रोटोकॉल का हिस्सा हो पर कयास लगाने में माहिर जनता और नेता अपनी-अपनी कहानी सुना रहे हैं. इस मामले में उपमुख्यमंत्री की चुप्पी भी व्यवस्था में कसावट पर अपनी मूक सहमति की मोहर लगा रही है. यह तो सभी स्वीकार करने लगे हैं कि इतने कम समय में अपनी कार्यसंस्कृति के कारण लोकप्रियता के प्रतिमान स्थापित करना किसी के लिए इतना सहज नहीं है. वर्तमान व्यवस्था में ब्यूरोक्रेसी से यह कल्पना साकार होते कम ही देखने को मिलती है. हालांकि उन्होंने अभी तक जिले में चारों ओर पनप रहे माफियाराज पर नकेल कसने के कोई संकेत नही दिए हैं फिर भी सोते-जागते, उठते-बैठते अवैध कारोबार में संलिप्त लोगों की नींद उड़ी हुई है. उन्हें यह भय सता रहा है कि कहीं प्रशासन की वक्रदृष्टि उन पर भी हो गई तो वर्षों से खड़े किए गए कारोबार पर पानी फिर जाएगा.... !

विंध्य में सियासी जमीन खिसकने के साथ बसपा हाशिये पर- विंध्य क्षेत्र में बहुजन समाज पार्टी का जनाधार समाजवादी पार्टी से मजबूत है. लेकिन वर्तमान में दोनों ही दल मुख्य रूप से हाशिये पर हैं. विंध्य क्षेत्र कभी बसपा का प्रमुख गढ़ माना जाता था और यहीं से पार्टी को पहला सांसद भी मिला था और तीन बार लोकसभा सीट पर बीएसपी चुनाव जीती. सबसे मजबूत सियासी जमीन विंध्य रही है. रीवा, सतना, सीधी, ऊर्जाधानी जिलों में बसपा का एक मजबूत दलित और बहुजन वोट बैंक रहा है. लेकिन समय के फेर के साथ हालिया चुनावों में बसपा का प्रभाव कम हुआ और पार्टी मुख्य मुकाबलों से दूर हो गई. बावजूद इसके कई सीटों पर भाजपा और कांग्रेस के बीच हार-जीत का अंतर तय करने की निर्णायक स्थिति में रहती है. दूसरे शब्दों में यह कहें कि बीजेपी-कांग्रेस का गणित जरूर बिगाड़ती है. विधानसभा व लोकसभा चुनाव के बाद पार्टी की गतिविधियां कम हो गई है और चुनाव नजदीक आने पर अपने खोये जनाधार को पाने के लिये पार्टी असंतुष्ट और बागी नेताओं को टिकट देने पर ध्यान केन्द्रित करेगी. लेकिन अभी संगठनात्मक एवं जन मुद्दों को लेकर पार्टी की गतिविधियां शून्य है. सपा का जनाधार बसपा से कम है, तीसरी ताकत के रूप में विंध्य में सपा ने हमेशा प्रयास किया लेकिन कोई बड़ी सफलता नहीं मिली. चुनाव में स्थानीय असंतुष्ट नेताओं और बागी हुए उम्मीदवारों को मैदान में उतार कर अपनी उपस्थिति दर्ज कराती रही है, लेकिन कोई खास कमाल नहीं कर पाई.

संगठन को मजबूत बनाने में जुटी कांग्रेस - संगठन सृजन अभियान के बाद से लगातार कांग्रेस पार्टी संगठनात्मक ढांचे को मजबूत करने मे लगी है. ब्लाक से लेकर बूथ तक कार्यकर्ताओं की टीम खड़ी हो इसके लिए हर संभव प्रयास किये जा रहे हैं. पूरे विंध्य मे कांग्रेस अपना खोया हुआ सम्मान पाने के लिए लगी लेकिन नेताओं की आपसी गुटबाजी और खींचतान का सीधा असर कार्यकर्ताओं के मनोबल पर पड़ता है . इस समय सभी विधानसभा में प्रभारी संगठन की बैठक लेकर अनुशासन के साथ-साथ एकता का संदेश दिया जा रहा है . हलांकि यह पहली बार नहीं हो रहा . सबसे बड़ा सवाल नेताओं को लेकर है .

जब सीएम डॉ . मोहन यादव ने ठेले पर खाया समोसा

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ . मोहन यादव शनिवार को सिंगरौली प्रवास के दौरान एक अलग अंदाज में नजर आए. विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए बैढ़न से एनटीपीसी की ओर जाते समय उनका काफिला नवजीवन विहार क्षेत्र में अचानक सड़क किनारे लगे इलाहाबादी समोसे के ठेले पर रुक गया . मुख्यमंत्री ने ठेले पर पहुंचकर दुकानदारों से बातचीत की और समोसे का स्वाद लिया . इस दौरान उन्होंने दुकान संचालकों से उनके परिवार, आजीविका और व्यवसाय के बारे में जानकारी ली . मुख्यमंत्री ने समोसों के स्वाद की सराहना करते हुए दुकानदारों का उत्साहवर्धन भी किया . सीएम के अचानक ठेले पर पहुंचने की सूचना मिलते ही आसपास के लोगों की भीड़ मौके पर जुट गई. लोगों में मुख्यमंत्री को करीब से देखने और उनसे मिलने का उत्साह दिखाई दिया . हालांकि सुरक्षा व्यवस्था में तैनात पुलिसकर्मियों ने भीड़ को नियंत्रित करते हुए व्यवस्था बनाए रखी . मुख्यमंत्री के इस सहज और आत्मीय अंदाज की चर्चा पूरे क्षेत्र में होती रही और स्थानीय लोगों ने इसे यादगार पल बताया.

युवा आक्रोश का प्रतीक कॉकरोच जनता पार्टी

कॉकरोच जनता पार्टी एक आक्रोश है जिसे हंसी-मजाक या हल्के में नहीं लिया जा सकता. सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने गत 15 मई को एक वकील को फटकारते हुए देश के बेरोजगार युवाओं की तुलना कॉकरोच (तिलचिट्टे) से की थी. इस पर तीव्र प्रतिक्रिया होने पर चीफ जस्टिस ने कहा कि उन्होंने फर्जी डिग्री लेकर वकालत करनेवाले युवकों के बारे में यह टिप्पणी की थी. उनके कथन का गलत अर्थ लगाया जा रहा है लेकिन तबतक काफी देर हो चुकी थी. इसके बाद एक अनोखी व्यंग्यात्मक हलचल हुई. आम आदमी पार्टी के पूर्व सोशल मीडिया स्वयंसेवक अभिजीत दीपके ने काक्रोच जनता पार्टी की स्थापना की. एक्स पर इस पार्टी के 88 लाख तथा इंस्टाग्राम पर 1 करोड 51 लाख फालोअर्स हैं. अभिजीत का कहना है कि व्यवस्था के विरुध्द आवाज उठानेवालों को सीजेआई ने कॉकरोच की उपमा दी है, इसलिए मन में विचार आया कि चीफ जस्टिस तो संविधान के संरक्षण हैं फिर वे संविधान में दिए गए अभिव्यक्ति की आजादी के अधिकार का इस्तेमाल करनेवालों के विरोध में कैसे बोल सकते हैं? यदि व्यवस्था के विरोध में आवाज उठानेवाले सभी कॉकरोच एकसाथ आ जाएं तो क्या होगा? युवा मन को आंदोलित करने वाले दीपके ने कहा कि वह युवाओं से पूछेंगे कि उनकी समस्या क्या है. उनकी राय जानना जरूरी है. कोई भी पार्टी या सरकार

युवकों से नहीं पूछती कि किस वजह से वह असंतुष्ट हैं और विफलता महसूस कर रहे हैं? राजनीति को सिर्फ चुनाव के रूप में देखा जाता है. नीट के पेपर लीक हो गए जिसके लिए निकम्मी व्यवस्था जिम्मेदार है. इस व्यवस्था को राजनेता संरक्षण देते हैं. शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग क्यों नहीं की जाती ? सत्ताधीशों को लगता है कि कोई उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता. पुलिस भर्ती परीक्षा के पेपर भी लीक होते हैं. 40 लाख युवा ऐसी परीक्षा देते हैं. परीक्षा रद्द कर नई तारीख घोषित कर हाथ झटक दिया जाता है. पूरा वर्ष बीतने पर भी नतीजा घोषित नहीं किया जाता. सोशल मीडिया में काक्रोच जनता पार्टी के बढ़ते प्रभाव का विपक्षी दल लाभ उठाने की सोचें तो आश्चर्य नहीं होगा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

अपनी लिमिट लांघते पैपराजी, सलमान की सही है नाराजगी

पड़ोसी ने हमसे कहा, अभिनेता सलमान खान उनका जबरन फोटो खींचने वाले पैपराजी पर भड़क उठे. उन्होंने कहा कि 60 साल का हो गया हूं लेकिन लड़ना नहीं भूला.

हमने कहा स्वाभाविक बात है कि जब कोई सेलेब्रिटी या प्रसिध्द व्यक्ति परेशान दुखी या उदास हो तो उसका फोटो क्यों खींचना चाहिए? पैपराजी हर जगह धमक पड़ते हैं. ट्राफिक सिग्नल पर, एयरपोर्ट पर जहां भी फिल्म स्टार दिख जाएं, उनकी तस्वीर उतार ली जाती है. अब ऐसे सोशल मीडिया पर फोटो डालने वालों ने अस्पताल के पास डेरा डालना शुरू कर दिया है. किसी फिल्म स्टार का परिजन या मित्र अस्पताल में एडमिट हो और वहां उसे देखकर बाहर निकला हो तो पैपराजी उसे घेर लेते हैं. उन्हें किसी के दुख, तकलीफ या मानसिक पीड़ा से कोई मतलब नहीं है. उन्हें सिर्फ फोटो खींचने से मतलब है. ऐसा सनी देओल के साथ भी हुआ जब वह अस्पताल के आईसीयू में दाखिल अपने बीमार पापा धर्मेंद्र को देख कर बाहर निकल रहे थे. ऐसे में गुस्सा तो आएगा ही! उन्होंने भी पैपराजी को संयम बरतने और संवेदना रखने की सीख देते हुए फटकारा था.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज हमने पहली बार पैपराजी शब्द को ब्रिटेन की प्रिंसेस डायना की दुर्घटना में मौत की खबर में सुना था. तब ब्रिटिश राजघराने की बहू डायना अपने प्रेमी डोडी फयाद के साथ मर्सिडीज कार से जा रही थी तभी पैपराजी ने फोटो खींचने के लिए अपनी गाडियों से उनका पीछा किया. उनसे बचने के लिए डोडी ने कार तेजी से दौड़ाई तो दुर्घटना हो गई और डायना व उनके प्रेमी की मौके पर मौत हो गई. यह घटना पेरिस में 31 अगस्त 1997 को हुई थी. किसी सनसनीखेज खबर व फोटो के लिए पैपराजी हमेशा ताक में रहते हैं. कभी वह टैबलायड पेपर या बुलेटिन के लिए यह काम करते थे. अब सोशल मीडिया की वजह से उनकी हरकतें और बढ़ गई हैं. उन्हें किसी की निजता या प्राइवेसी से कोई मतलब नहीं है. वह सिर्फ अपना टारगेट ढूंढते हैं. उसके दुख या आंसू भी उन्हें नही पिघलाते हमने कहा, %प्रसिध्द होने की यही कीमत चुकानी पड़ती है. फैन और पैपराजी जीना हराम कर देते हैं. रेस्टोरेंट, जिम, अस्पताल हर जगह पीछा करते हैं.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12267
- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4	■	5		6
7				■		■	
8		■	■	9		10	
11			12		■	13	
■	■	■	14				■
15		16			■	17	18
	■	19		■	20		
21		■	22			■	

बाएं से दाएं

1. गोस्वामी तुलसीदास का नाम 5. घड़ा, मंदिर आदि का शिखर (सं.) 7. बड़ा राजा, गुरु- ब्राम्हण आदि का सम्मानसूचक संबोधन 8. यम 9. वे पुस्तक ग्रंथ समाचार-पत्र आदि जो प्रकाशित किए जाए, प्रकाशित करने का काम 11. सांख्यदर्शन का वह सिद्धांत जो आत्मा को अनेक मानता है (सं.) 13. मृत्यु के देवता 14. डाटना, घुड़कना 15. कृत्रिम, बनावटी, जो स्वाभाविक न हो 17. कपोल 19. रोटी सेंकने का लोहे का गोल छिछला बर्तन 20. भांति, प्रकार 21.सूर्य (सं.) 22. दाह, आग

ऊपर से नीचे

1. जिस व्यक्ति के पिता का पता न हो, वर्णसंकर 2. उदारचित्त, ऊंचे दिलवाला 3. जूट का बना बड़ा थैला 4. शर्मा, लज्जा, प्रतिष्ठा 5. किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द, उपवास, 6. ओस 9. प्रकाश करने वाला, छोटा दीया, स्पष्ट करने वाला (सं.) 10. सोने का स्थान या गृह 12. तर्क-वितर्क, बहस (सं.) 15. ओंठ, अंतरिक्ष 16. उबालकर पकाया हुआ चावल 18. हिलोर, तरंग 20. शरीर, देह

Solution 12266

श	व	■	क	म	■	ल	क्ष
■	की	■	द	र्द	■	पे	■
ब	ल	शा	ली	■	फ	ट	का
लि	■	का	■	नी	र	■	र
दा	■	हा	वी	■	व	■	खा
न	ग	री	■	ख	री	द	ना
■	ली	■	दा	ब	■	इ	■
नी	चा	■	वा	र	■	न	त्थी

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में नवीन कार्यों में रूचि एवं सफ्लता मिलेगी, व्यापार में लाभ होगा, वर्ष केमध्य में सत्ता सुख मिलेगा, स्थाई लाभ कायोग है, वर्ष के अन्त में माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य से मन अशांत रहेगा, अधिकारियोंका सहयोग मिलेगा, भागदौड़ के बाद सफ्लता मिलेगी, अधिकारियों से मतभेद में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य से मन अशांति का अनुभव करेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को स्थाई लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिकारियों से मतभेद भी होंगे, कर्क राशि के व्यक्तियों को संतोष रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को परिश्रम का फ्ल अधिक प्राप्त होने का योग है. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भागदौड़ से अच्छी सफ्लता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक दुबला पतला, स्वतंत्र विचारपों का सहिष्णु एवं सहयोगी भावना वाला होगा, इनमें क्रोध को नियंत्रण करने की क्षमता रहेगी, स्वयं हानि उठाकर दूसरों को लाभ पहुंचाने वाला होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

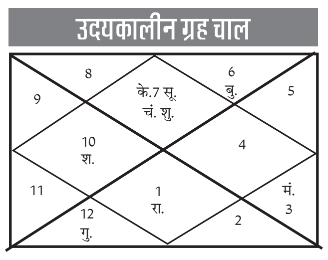

पंचांग

रा.मि. 04 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ शुक्ल नवमीं चन्द्रवासरे दिन 8/2, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रे प्रात: 6/35, हर्षण योगे दिन 7/33, कौलव करणे सू.उ. 5/19, सू.अ. 6/41, चन्द्रचार सिंह दिन 12/41 से कन्या, शु.रा. 5,7,8,11,12,3 अ.रा. 6,9,10,1,2,4 शुभांक- 7,9,3.

व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल नवमीं को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड़, शक्कर, जूट, पाट, बारदाना, में मंदी होगी, गेहूँ, जौ, चना, बाजरा, उड़द, मूँग, मोठ, में तेजी होगी, जिस वस्तु में पिछले दिन के भाव बढ़े उसी में मार्केट टूटेगी. भाग्यांक 1409 हैं.

मेष- पुराना विवाद हल होगा, तीखी बातों से करीबी नाराज हो सकते हैं, शिक्षा संतान कार्यों में सफ्लता मिलेगी, निजी कार्यों में व्यस्तता रहेगी.

वृषभ- अधिक भागदौड़ से स्वास्थ्य प्रभावित होगा, कानूनी मामले सुलझने के आसार हैं, नौकरी में अधिकारियों का सहयोग रहेगा, दूर दराज की यात्रा होगी.

मिथुन- भाग्य से लाभदायक अवसर हाथ में आ सकते हैं, कैरियर में बेहतर प्रस्ताव मिलेंगे, शारीरिक कष्ट, मानसिक परेशानी होगी, प्रियजनों का सहयोग रहेगा.

कर्क- विरोधी नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे, अपनों के स्वास्थ्य की चिन्ता होगी, खर्च अधिक होगा, स्वजनों से संतुलित संभाषण हितकर रहेगा, शुभ संदेश रहेगा.

सिंह- न्यायालयीन मामलों में सफ्लता मिलेगी, रक्त संबंधियों से मतभेद होगा, सामाजिक कार्य में सफ्लता, यश, सम्मान प्राप्त होने का योग है.

कन्या- नौकरी में अधिकारियों का सहयोग रहेगा, कारोबारीदूर दराज की यात्रा होगी, खर्च अधिक होगा, अतिथि आगमन का योग है.

तुला- धार्मिक आयोजन में शामिल होकर खुशी होगी, आकस्मिक धन प्राप्त होगा, नवीन लाभदायक योजनाओं का विकास होगा.

वृश्चिक- अधिकारी नाराज हो सकते हैं, गुप्त शत्रुओं के अवरोध के कारण दैनिक कार्य संपादन में परेशानी होगी, खर्च की अधिकता रहेगी.

धनु- बुजुर्गो के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, मित्रों से विवाद की संभावना है, व्यापार में उत्तम सफ्लता मिलेगी, जीवनसाथी के सहयोग से कार्य बनेगा.

मकर- बिखरे काम को समेटने में सफ्लता मिलेगी, जानबूझकद सहकर्मी नुकसान पहुचाने का प्रयत्न करेंगे, पारिवारिक कार्यो में व्यस्तता रहेगी, जल्दबाजी न करें.

कुम्भ- समय पर मदद न मिलने से परेशानी होगी, भावनाओं में बहकर महत्वपूर्ण निर्णय न करें, श्रम एवं प्रयास करने से इच्छित सफ्लता मिलेगी.

मीन- विपरीत परिस्थिति में समझौता करना लाभकारी रहेगा, महत्वपूर्ण उपलब्धि मिलेगी, संपत्ति वाहन, का सुख रहेगा, प्रयास सार्थक होगा.

SUDOKU 7399

	9				4			7
					7	9		
8								
4		5	8					
3				1				2
					9	7		6
								4
		3	5					
2			6				8	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7398

7	8	5	2	6	3	1	4	9
4	3	1	9	7	5	8	2	6
2	6	9	1	4	8	7	5	3
3	1	4	6	8	9	5	7	2
9	5	8	7	2	4	6	3	1
6	7	2	5	3	1	9	8	4
5	2	7	3	9	6	4	1	8
1	4	6	8	5	2	3	9	7
8	9	3	4	1	7	2	6	5